डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

बी० ए० स्नातक सेमेस्टर - V
विषय - संस्कृत, MJC - VIII
कर्म-विवेचन (तर्कसंग्रह)

चलनात्मक कर्म है - चलनात्मकं कर्म। अन्नम्भट्ट ने कर्म का लक्षण देते हुए कहा कि जो संयोग से भिन्न हो, अपने आश्रय द्रव्य में समवाय सम्बन्ध से स्थित होकर उसमें 'संयोग' नामक गुण को उत्पन्न करता है, वह कर्म है। कर्म को पाँच भागों में विभक्त किया गया है (i) उत्क्षेपण (ii) अपक्षेपण (iii) आकुञ्चन (iv) प्रसारण तथा (v) गमन।

(i) उत्क्षेपण -
ऊर्ध्व देश से संयोग का हेतु उत्क्षेपण है - ऊर्ध्वदेशसंयोग-हेतुरुत्क्षेपणम्।

(ii) अपक्षेपण -
अधो देश से संयोग का हेतु अपक्षेपण है। अधोदेशसंयोग-हेतुरपक्षेपणम्।

(iii) आकुञ्चन -
शरीर के समीप संयोग का हेतु आकुञ्चन है। शरीरसंनिकृष्टसंयोगहेतुराकुञ्चनम्।

(iv) प्रसारण -
शरीर से दूर संयोग का हेतु प्रसारण है - विप्रकृष्टसंयोग-हेतुः प्रसारणम्।

(V) गमन -

शेष सब गमन है - अन्यत्सर्वं गमनम्। ये सभी कर्म पृथिवी आदि तथा मन में रहते हैं।

नित्य एक किन्तु अनेकों में अनुगत 'सामान्य' है। यह द्रव्य, गुण और कर्म में रहता है। पर सामान्य सत्ता है। अपर द्रव्यत्व आदि है। नित्य द्रव्य में रहने वाला व्यावर्तक 'विशेष' है।